श्रीहरिः

वैतालिक

लेखक

मैथिलीशरण गुप्त

फिर अपने को याद करो;
उठो, अलौकिक भाव भरो।

प्रकाशक
साहित्य-सदन, चिरगाँव (झाँसी)

द्वितीयावृत्ति] संवत् १९८४ [मूल्य ।)

बन्धु वृन्दावनलाल वर्मा

बी. ए., एल-एल. बी.,

के

कुशल-करों में

ऊषा ने आँगन लीप दिया;
रवि किरणों ने चौक पूर कर मङ्गल-कलश लिया।
अन्तर्वीर चर उठे, द्विजों ने सन्ध्याभास किया:
[illegible]ति-भानु के कर-ग्रहण से हुलसे आज हिया॥

* * * *

प्रातः का है काम यही,
कि वह जागरित करे मही।
निद्रा का अवसान करे,
ज्योति जगत को दान करे॥

श्रीगणेशायनमः

वैतालिक

(१)

श्री रवि-कुल-मणि रघुनायक,
तुम को रहें सिद्धिदायक ।
श्री सीता धन-धान्य भरें,
उर्वर कर्म्म-क्षेत्र करें ॥

(२)

नई पौ फटी, रात कटी;
तम की अन्तर-पटी हटी ।
उठो, उठो, बोलो, डोलो,
खोलो मनो-द्वार खोलो ॥

(३)

बन्द किवाड़ न रक्खो अब,
कोई आड़ न रक्खो अब ।
[illegible] घर जाने दो,
शुद्ध समीरण आने दो ।।

(४)

हिम-कण उसे उड़ाने दो,
मिथ्या स्वप्न छुड़ाने दो ।
इस कल्पित माया में क्या ?
प्राणहीन काया में क्या ?

(५)

चिर निद्रा का जाल कटे,
युग युग का जंजाल हटे ।
हृदय हृदय में लगने दो;
भय भगने, जय जगने दो ।।

(६)

उर की आग उभड़ने दो,
प्रेमाहुतियाँ पड़ने दो ।
सरस सुगन्धि समाने दो,
मस्तक को बल पाने दो ।।

(७)

बनें कूप मण्डूक निरे,
रहो घरो मे ही न घिरे ।
आओ, अब बाहर आओ,
ममता मे समता लाओ ॥

(८)

विश्व अजिर मे प्राप्त रहो,
इस असीम मे व्याप्त रहो ।
जल, थल, गगन, अनन्त जहा,
अन्तवन्त क्या तुम्हीं वहा ?

(९)

कभी नहीं, कह दो सब से,
मैं भी हूँ अनन्त अब से ।
मैं भी स्वाधीनात्मा हूँ,
परमात्मा-लीनात्मा हूँ ॥

(१०)

निश्चय तुम मुक्तात्मा हो,
परमात्मा युक्तात्मा हो ।
अजरामर, अविनाशी हो,
तेजोराशि-विकाशी हो ॥

(११)

फिर अपने को याद करो,
उठो, अलौकिक भाव भरो।
अपना धैर्य्य-धर्म्म पालो,
मोहावरण हटा डालो॥

(१२)

अब न वस्त्र से मुँह ढाँको,
खिड़की से बाहर झाँको।
उससे वायु आ रही है,
पर यों आयु जा रही है॥

(१३)

यह तन सोने को न मिला,
जीवन खोने को न मिला।
आयु गँवाना उचित नहीं।
रहना शुभ संकुचित नहीं॥

(१४)

यह काया मृतिका-खनि है,
तो जीवन चिन्तामणि है।
उसको प्रभा प्रकाश करो,
अन्तर का तम नाश करो॥

(१५)

तुम कृतार्थ हो जाओगे,
जो चाहोगे पाओगे।
प्रभु भी उस मणि को पहने,
फीके हों सौ सौ गहने,

(१६)

स्वर्णालोक-पूर्ण नभ है,
जो सूना था सु-प्रभ है।
रहो तुम्हीं क्यों रिक्त हृदय,
करो शुभाशा-सिक्त हृदय ॥

(१७)

यह मौन की मूर्ति उषा,
नव स्फूर्ति की पूर्ति उषा।
जगा रही है, जगो, जगो,
कर्तव्यों में लगो, लगो ॥

(१८)

यह ललाट सिन्दूर अहा!
देखो कैसा दमक रहा।
नभस्थली सौभाग्यवती,
देख रही है बाट सती ॥

(१९)

यह सोने का थाल लिये,
उज्ज्वल उन्नत भाल किये।
सृष्टि तुम्हारे लिए खड़ी,
दृष्टि तुम्हारी किधर पड़ी ?

(२०)

तम की सब कालिमा धुली,
आँख तुम्हारी क्यों न खुली ?
निरालस्य सब हो जाओ,
इस श्रेयःश्री को पाओ ॥

(२१)

हरे पाँवड़े बड़े बड़े,
जिन में लाखों रत्न जड़े।
बिछा चुकी है वसुन्धरा,
उठो, हृदय हो जाय हरा ॥

(२२)

स्वागतार्थ वह प्रस्तुत है,
गद्गद-सी, शोभा-युत है।
देखो, प्रेम-भरे आँसू,
मोती-से, बिखरे आँसू ॥

(२३)

जल भी परम उमङ्ग-भरा,
नाच रहा है रङ्ग-भरा।
शत तरङ्ग-कर बढ़ा रहा,
तुम पर अम्बुज चढ़ा रहा॥

(२४)

अम्बुज भी हैं खिले हुए,
हेला से कुछ हिले हुए।
रहते हैं वे जल पर यों,
कि तुम रहो भूतल पर ज्यों॥

(२५)

रत्नाकर धन-कोष-भरा,
लुटा रहा धन कोप-भरा!
यह अवसर है सोने का,
या सोने में सोने का!

(२६)

खग उड़ने के लिए तुले,
मधुपों के भी द्वार खुले।
बन्द कपाट तुम्हारे क्यों?
तुम अब भी मन मारे क्यों?

(२७)

घूम रहे अलि अनलस हैं,
पीते फूलों का रस है।
तुम भी बनो गुण-ग्राही,
मौज मिलेगी मन-चाही ॥

(२८)

वंश वंश वंशीधर है,
एक तान मे तत्पर है।
नया श्वास सञ्चार हुआ,
क्या ही कल झङ्कार हुआ ॥

(२९)

उत्सुक खग-गण गाते हैं,
प्रिय सन्देश सुनाते हैं।
नाच रहे हैं पर्ण, उठो,
हो जाओ उत्कर्ण, उठो ॥

(३०)

फूल फूल कर फूल रहे,
वृन्त-दोल पर झूल रहे।
देखो रङ्ग-ढङ्ग उन के,
कोमल अमल अङ्ग उनके ॥

(३१)

खड़े सुरभि उपहार लिये,
अपने को भी हार किये।
सुनो त्याग की इस धुन को,
भुजालिङ्गन दो उन को ॥

(३२)

हरी भरी वर वृक्षाली,
लिये फलों की है डाली।
झोंके आ आ कर किसके,
हाथ चूमते हैं इसके ॥

(३३)

गुन गुन सगुण गान कर के,
मधु मकरन्द पान कर के।
मधुकर मुक्त घूमते हैं,
कुसुम कपोल चूमते हैं ॥

(३४)

भर आये थन गायों के,
उन सदैव की धायों के।
प्रस्तुत है पय पियो, उठो,
नवजीवन से जियो उठो ॥

(३५)

खोलो तनिक पलक अब तो,
देखो, एक झलक अब तो
हम भी सब तुम को देखें,
अपना लो, अपना लेखें ॥

(३६)

हुआ सकल संसार नया,
खुला प्रकृति का द्वार नया ।
कौतुक देखो, उठ बैठो,
तुम उसके भीतर पैठो ॥

(३७)

कण कण में वह सत्ता है,
जिसकी नहीं इयत्ता है ।
जो न समा कर जल थल मे,
भरी गगन, अनिलानल मे ॥

(३८)

उसके चमत्कार देखो,
सब मे एक सार देखो ।
जड़ मे चेतनता आई
प्रतिमा मे प्रभुता छाई ॥

(३९)

नव्य आरती सजो, उठो,
भव्य भारती भजो, उठो।
कार्य्य-शक्ति का दर्शन लो,
आर्य-भक्ति का स्पर्शन दो ॥

(४०)

किरणों की मार्जनी चली,
हुई सूर्य की स्वच्छ गली।
बन्द तुम्हारा ही पथ क्यों ?
रुद्ध विशुद्ध मनोरथ क्यों ?

(४१)

कब से तुम न गये आये,
घास-पात पथ पर छाये।
किन्तु हिचकिचाहट न करो,
उनके सिर पर पैर धरो ॥

(४२)

ऊर्ध्व करों से दिव-दल को,
निम्न करों से भूतल को।
रवि ने मानों एक किया,
दोनों को आलोक दिया ॥

(४३)

अरुण किरण लेखाएँ ये,
पूर्व-भाग्य रेखाएँ ये।
सुवर्णार्थ पात्राएँ ये,
गूढ़ाक्षर मात्राएँ ये॥

(४४)

छन्दोरचनाएँ रवि की,
कविताएँ अनन्त कवि की।
आहुतियाँ अनादि हवि की,
छुटी छटाएँ हैं छवि की॥

(४५)

या अनुराग सदन-सतियाँ,
पुण्यश्लोक-पंक्ति-गतियाँ।
कर कर के नीरव बतियाँ,
जगा रही मन की मतियाँ॥

(४६)

प्रेम-शृङ्खला मालाएँ,
बोधोदय की बालाएँ।
यद्यपि कुछ तरलाएँ हैं,
पर कितनी सरलाएँ हैं॥

(४७)

कनक-कमल-केसर-कलियाँ,
ज्ञान-गिरा गुण की गलियाँ।
या कि कर्म्म की कृतियाँ हैं,
भक्ति-भावना-भृतियाँ हैं॥

(४८)

देवलोक की तारायें,
सुरभी की पय धारायें।
गणनायें प्रकाश गुण की,
लोल लटें बालारुण की॥

(४९)

ये जीवन जल की नलियाँ,
मारुत मण्डल की स्थलियाँ।
प्रकृति-नियम की पद्धतियाँ,
काम वर्ग की रुचि रतियाँ॥

(५०)

छवियाँ अतुल चित्र पट की,
कि कलायें नागर नट की।
गुण-रज्जुयें अमृत घट की,
शाखायें विराट-वट की॥

(५१)

चाले नभः क्षेत्र कृषि की,
पिङ्ग जटाएँ ऋतु-ऋषि की।
कल्प लताएँ ये कब की,
नयन शलाकाएँ सब की॥

(५२)

भव की नीरव भाषाएँ,
उज्ज्वल उर की आशाएँ।
सूत्र वृत्तियाँ हाटक की,
नटियाँ नैतिक नाटक की॥

(५३)

दीप-वर्तियाँ दिव की है,
जड़ी बूटियाँ शिव की है।
ये हरिचक्र प्रखर आरें,
तुम्हें तमोगुण से तारें॥

(५४)

सहस्राक्ष की ये आँखे,
रंग-विहंगों की पाँखे।
शत शत दृष्टि-यष्टियाँ है,
वासर-विभा-वृष्टियाँ है॥

(५५)

उमर राजियाँ ये किस की ?
स्फुरित शिराएँ हैं जिसकी ।
चित्र कोप तालियाँ यहीं,
बुद्धि-तन्तु-जालियाँ यहीं ।।

(५६)

प्रेमाञ्जलियाँ पूषा की,
पुलकावलियाँ ऊषा की ।
अंगुलियाँ दिग्द्रष्टा की,
वर्ण-तूलियाँ स्रष्टा की ॥

(५७)

नजग ज्योतियाँ स्थिर जप की,
मन्त्र छटाएँ चिर तप की ।
ये सब तुम्हें पवित्र करें,
अनुदिन अखिल अरिष्ट हरें ॥

(५८)

हैं जो इष्ट अपेक्षाएँ,
उन सब की उपेक्षाएँ ।
ये स्वर लिपियाँ नई पढ़ो,
गाओ जीवन गीत, बढ़ो ॥

(५९)

रवि पश्चिम को जाता है,
वहाँ ज्योति फैलाता है।
फिर प्राची को आता है,
ललित लालिमा लाता है॥

(६०)

आवागमन युक्त रवि है,
पर निष्काम मुक्त रवि है।
यही तुम्हारा भी क्रम हो,
मित्र, तभी सार्थक श्रम हो॥

(६१)

दुर्गति मे सन्तोषी हो,
तो तुम प्रभु के दोषी हो।
उसने जो भव-विभव दिया,
उसे आप तुम ने न लिया॥

(६२)

त्याग, त्याग पर वह किस का ?
प्रथम प्राप्त तो हो जिस का।
प्राप्त करो तब, त्याग करो,
समुचित कर्म-विभाग करो॥

(६३)

प्रेम छोड़ कर श्रेय लिया,
तो भी क्या कर्तृत्व किया।
स्वयं प्रेय में श्रेय रहे,
और ध्येय में ज्ञेय रहे ॥

(६४)

जुड़ा जगत का मेला है,
क्या यह सभी झमेला है?
खेल कौन यह खेल रहा?
क्यों इतना श्रम झेल रहा?

(६५)

भुवन-भीड़ में बिना घुसे,
पाओगे किस भाँति उसे?
जी में जिस की चाह भरी,
कह दूँ किस की आह भरी?

(६६)

कहते हो कि कहाँ है वह?
देखो जहाँ, वहीं है वह।
किसी ओर सीधा मोड़ो,
कन्धे से कन्धा जोड़ो ॥

(६७)

परिवर्तित कर दृश्य पटी,
नाट्य कर रही प्रकृति नटी ।
सूत्रधार के बिना कभी,
रहती यह शृङ्खला सभी ?

(६८)

वह अपने छात्रों मे है,
परिवर्तित पात्रों मे है ।
पर है प्रकट क्रिया उसकी,
देगी पता प्रिया उसकी ॥

(६९

जो भव-नाटक स्रष्टा है,
वही नाट्य का द्रष्टा है ।
पात्र बनो सब खेल करो,
आप अलग हो, तुम न डरो ॥

(७०)

श्री शुक ने सब को छोड़ा,
रम्भा से भी मुँह मोड़ा ।
किन्तु विदेह कर्म्मयोगी,
मुक्त रहे, रह कर भोगी ॥

(७१)

प्रकृति पुरुष की है क्रीड़ा,
कभी विकास कभी व्रीड़ा ।
जीव, ब्रह्म-माया न तजो,
शिव को शक्ति समेत भजो ॥

(७२)

ऊँचे चढ़ो, खड़े हो तुम,
इतने बढ़ो, बड़े हो तुम ।
तुम्हें प्रलोभन छू न सकें,
आशा छोड़ें, अलग तकें ॥

(७३)

पड़े पड़े पछताओगे,
पैरों से पिस जाओगे ।
गिरने के डर से पड़ना,
मृत्यु मार्ग में है अड़ना ॥

(७४)

जीते हो कि मरे हो तुम ?
मुर्दा बने धरे हो तुम !
जय है यहाँ प्राण पण में,
मरण कहाँ जीवन रण में ?

(७५)

जाने दो सब बातों को,
आने दो आघातों को ।
तुम केवल कुछ कड़े रहो,
आत्म व्रत पर अड़े रहो ॥

(७६)

चला करे संसार पवन,
ढा न सकेगी मनोभवन ।
बाहर कर्म-क्रान्ति रहे,
भीतर अविचल शान्ति रहे ॥

(७७)

पश्चिम तक प्रकाश फैला,
जागा वह छवि का छैला ।
उड़ने लगीं लाल मुनियाँ,
है बस गई नई दुनिया ॥

(७८)

बस कर तुम्हीं उजड़ते हो,
बन कर स्वयं बिगड़ते हो ।
मानों, अब यों पिछड़ो मत,
उठो, विश्व से बिछड़ो मत ॥

(७९)

वह भौतिक उन्नति देखो,
सब विषयों की श्रति देखो
वह अप्रतिहत गति देखो ,
प्रकृति-विजय-पद्धति देखो ॥

(८०)

नहीं काम से थकते वे,
जो चाहे कर सकते वे ।
कहीं पक्ष से मुड़ते हैं,
अम्बर में भी उड़ते हैं ॥

(८१)

जो मस्तक में लाते हैं,
कर से कर दिखलाते हैं ।
सागर उन का घरना है,
डर को भी कुछ डर-सा है ॥

(८२)

वे स्वतन्त्र दृढ़ चेता हैं,
अद्भुत यन्त्र प्रणेता हैं ।
विद्युद्वाष्प विजेता हैं,
बने विश्व के नेता हैं ॥

(८३)

मिट्टी भी छू लेते हैं,
तो सोना कर देते हैं।
वे साहस के पाले हैं,
अति अपूर्व बल वाले है॥

(८४)

वाहन उन के वायु भरे,
जीवित लोह-स्नायु भरे।
बाजे उन के गाते हैं,
चित्र नाट्य दिखलाते है॥

(८५)

कोरी बातों से बचते,
नहीं धुवें के पुल रचते।
किन्तु उसे भी धरते हैं,
और प्रज्वलित करते है॥

(८६)

सड़ते नहीं सुफल उन के,
विफल नहीं कौशल उन के।
वे जो आशा-वादी हैं,
उद्यम के उन्मादी हैं॥

(८७)

पण्यवीथियाँ भूतल की,
भारी से लेकर हलकी।
उन की आय-साक्षिणी हैं,
नर व्यवसाय-साक्षिणी हैं॥

(८८)

विभव उन्हें अपनाते हैं,
आप खोजते आते हैं।
वे उन से घर भरते हैं;
सब विघ्नों को तरते हैं॥

(८९)

बच्चे भी कब हैं जकते,
नहीं पराया मुहँ तकते।
आप जमा कर जाते हैं,
आप कमा कर खाते हैं॥

(९०)

वे अविचल उद्योगी हैं,
तब भव-वैभव-भोगी हैं।
है कुछ करने के मनकी,
धुन है नित्य नये पन की॥

(९१)

स्वावलम्ब की साध उन्हे,
भिक्षा है अपराध उन्हे ।
रखते है उद्देश सभी,
होते नहीं हताश कभी ॥

(९२)

शक्ति-समाराधक सब है,
देश-भक्ति-साधक सब है ।
प्रिय हैं तुम्हे वेश उनका,
वे है और देश उनका ॥

(९३)

तुम भी बन जाओ वैसे,
अथवा पहले थे जैसे ।
सम्मुख हैं दृष्टान्त खड़े,
फिर भी तुम किस लिए पड़े ॥

(९४)

दिनमणि पन्था दिखा रहा,
अवसर सन्था दिखा रहा ।
देखो, और स्वयं दीखो,
जो सिखलाया था सीखो ॥

(९५)

आप आत्म-उद्धरण करो,

कुछ न बने, अनुकरण करो।

पर अन्धों की भाँति नहीं,

तुम भेड़ों की पाँति नहीं॥

(९६)

पुरुषोत्तम के अंशज हो,

उन ऋषियों के वंशज हो—

प्रकट हुई जिनके द्वारा,

विश्व-धर्म की ध्रुव-धारा॥

(९७)

यहाँ तुम्हारी व्याप्ति नहीं,

तनु के साथ समाप्ति नहीं।

तुम्हें वहाँ भी जाना है,

हुआ जहाँ से आना है॥

(९८)

उन को इन का ध्यान नहीं,

जो कुछ है विज्ञान यहीं।

यही जगत उन का घर है,

किन्तु तुम्हारा पथ भर है॥

(९९)

रम्य रहे इस की रचना,

पर विलासिता से बचना।

पश्चिम जिस से डूब रहा,

और यहाँ तक, ऊब रहा ॥

(१००)

वहाँ बनावट की रट है,

देखो जहाँ, दिखावट है।

अपने भी सब पर-से है,

घर भी वे बाहर-से है ॥

(१०१)

केवल बाह्य साज सज्जा,

रख सकती है यदि लज्जा।

तो है उसे प्रणाम वहीं,

हम को उस से काम नहीं ॥

(१०२)

क्षुब्धेन्द्रियोपासनाएँ,

नित्य नवीन वासनाएँ।

करें बड़प्पन सिद्ध जहाँ,

आत्म-तृप्ति फिर वहाँ कहाँ?

(१०३)

यहाँ न वह उन्नति जागे,
जो कि बड़ों के भी आगे।
नत होते संकुचित करे,
आत्म-पतन के लिए डरे॥

(१०४)

यहाँ प्राप्त करने को मन,
मन के साथ चाहिए धन।
इसी लिए मन टूट रहा,
जीवन को धन लूट रहा॥

(१०५)

आत्मा बना वहाँ मन ही,
सुख का साधन है धन ही।
तनु पर जीवन-ममता है,
क्षमता के हित समता है॥

(१०६)

पश्चिम खाता पीता है,
इसी लिए वह जीता है।
छूट रहे है वह जीना—
मरने से न जाय छीना॥

(१०७)

वह संयोग मात्र पा कर,
प्रकटित हुआ यहाँ आकर।
पर तुम आप न आये हो,
कुछ सन्देसा लाये हो ॥

(१०८)

तुम को उसे सुनाना है,
सब को यह बतलाना है—
"हुए नहीं तुम मरने को,
आये हो कुछ करने को ॥"

(१०९)

पश्चिम पथ मे भूला है,
मिथ्या मद मे फूला है।
देह अभी तक क्लान्त नहीं,
पर उसका मन शान्त नहीं ॥

(११०)

'मैं' के साथ वहाँ 'तू' है,
'मैं' मे भरी यहाँ 'भू' है।
'नेपोलियन' वहाँ होते,
तुम मे 'बुद्ध' बोध बोते ॥

(१११)

भय पर उस की सत्ता है,
शस्त्रों से सुमहत्ता है।
किन्तु तुम्हारी विश्व-विजय,
रही प्रेम की प्रभुता मय ॥

(११२)

अधिकृत कर के हृदयासन,
तुम ने किया लोक-शासन।
लिये कमण्डलु ही कर में,
पूजित हुए विश्व भर में ॥

(११३)

इस अशान्ति का काम न था;
कहीं भ्रान्ति का नाम न था।
आत्म-बुद्धि सब के हित थी;
शान्ति स्वयं समुपस्थित थी ॥

(११४)

तुम कितने बड़भागी थे,
नृप होकर भी त्यागी थे।
फिर भी आत्म-परीक्षा दी,
नृप बन कर गुरु-दीक्षा दी ॥

(११५)

उन का सा दृढ़ पक्ष रहे,
पर अपना ही लक्ष्य रहे ।
उन का ऐसा ढंग बढ़े,
पर अपना ही रंग चढ़े ॥

(११६)

उन की सी साधना रहे,
अपनी आराधना रहे ।
उन का अथक परिश्रम हो,
पर उस में अपना क्रम हो ॥

(११७)

उन की ऐसी कृति रक्खो,
अपनी किन्तु प्रकृति रक्खो ।
उन का सा आवेश रहे,
पर अपना उद्देश रहे ॥

(११८)

उन का प्रेय, श्रेय अपना,
उन का ज्ञेय, ध्येय अपना ।
उन की गति, पद्धति अपनी,
उन की उन्नति, मति अपनी ॥

(११९)

उन की प्रस्तावना पगे,
पर अपनी भावना जगे।
उन का सा उद्योग करो
किन्तु भोग मे योग भरो ॥

(१२०)

आदान-प्रदान यह हो,
त्याग पूर्ण शुभ संग्रह हो।
उन का ग्रह-विद्रोह मिटे,
और तुम्हारा मोह मिटे ॥

(१२१)

हृदय और मस्तिष्क खिलें,
ज्ञान और विज्ञान मिलें ॥
लोक और परलोक लसे,
दोनों घर वे रोक बसें ॥

(१२२)

बैठो वीर मनोरथ में,
विचरो सदा प्रेम पथ में।
तुम प्रकाश-से खिल जाओ,
अखिल विश्व में मिल जाओ ॥

(१२३)

ऊँची पुनः पताका हो,

सत्य धर्म्म का साका हो ।

भूतल की सब भ्रान्ति मिटे,

और तुम्हारी श्रान्ति मिटे ॥

(१२४)

जीवन के सब फल चक्खो,

इस का किन्तु ध्यान रक्खो—

आये जगत जुड़ाने तुम,

उस के बन्ध छुड़ाने तुम ॥

(१२५)

भारत माता के बच्चे,

विश्व-बन्धु तुम हो सच्चे ।

फिर तुमको किस का भय है,

उन्नत हो जय ही जय है ॥

हिन्दी के ख्यातनामा कवि
श्रीमैथिलीशरणजी गुप्त कृत नवीन काव्य—

हिन्दू

गुप्तजी का भारत-भारती नामक प्रसिद्ध राष्ट्रीय काव्य हिन्दी भाषा-भाषियों ने बड़े प्रेम और आदर के साथ अपनाया है। उन्हीं की ज़ोरदार लेखनी से यह "हिन्दू" नामक काव्य लिखा गया है। इससे हिन्दुओं को उठ खड़े होने के लिए जो उत्तेजन दिया गया है वह बहुत प्रभाव-शाली है। पुस्तक के अन्त मे कुछ गीत दिए गये हैं, वे भी भाव, भाषा और ओज मे अतुलनीय है। उत्सव, संकीर्तन, और सभा आदि सामूहिक कार्यों मे इन गीतो के द्वारा एक नई ही बात पैदा हो सकती है। यह काव्य हिन्दुओं की दुर्बलता दूर करने के लिए,—उन्हें फिर से सशक्त और संगठित करने के लिए—बहुत बड़ी सहायता देगा। हिन्दुओं के संगठन के लिए आज तक जितनी भी पुस्तकें प्रकाशित हुई है उन सबमें इस ग्रन्थ का आसन बहुत ऊँचा है। जो गुप्तजी की चमत्कारिणी लेखनी से परिचित हैं उनसे इसके विषय मे कुछ कहना ही व्यर्थ है। आप स्वयं इसे पढ़िए और अपने इष्ट मित्रों में इसका प्रचार कीजिए। इस वाणी का जितना अधिक प्रचार होगा, देश और हिन्दू जाति का उतना ही अधिक उपकार होगा।

पुस्तक नेत्र-रञ्जक पाकेट साईज में है। पृष्ठ-संख्या भी २७५ से अधिक है। मूल्य सजिल्द १) विशिष्ट संस्करण १।)

पता—प्रबन्धक,
साहित्य-सदन, चिरगाँव (झाँसी)

मेघनाद-वध

आधुनिक समय के भारतीय सफल साहित्यकों में से बंगाल के महाकवि माइकेल मधुसूदन दत्त का नाम बहुत प्रसिद्ध है। उन्हीं के सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य "मेघनाद-वध" का यह हिन्दी पद्यानुवाद हिन्दी के लिए गौरव की वस्तु है। इसके विषय में आचार्य

प० महावीरप्रसाद जी द्विवेदी लिखते हैं—

"मेघनाद-वध का कुछ अंश छपा हुआ मैं पहले भी देख चुका हूँ। कल दिन भर उसकी सैर की। बड़ा आनन्द आया। मूल मेरा पढ़ा हुआ है, उसकी अपेक्षा मुझे यह अनुवाद अधिक पसन्द आया। ओज की यथेष्ट रक्षा हुई है, शब्द-स्थापना का क्या कहना है।"

सुप्रसिद्ध बङ्गाली विद्वान्,
मूल मेघनाद-वध महाकाव्य के प्रतिष्ठित टीकाकार,
श्रीज्ञानेन्द्रमोहनदास की सम्मति का सारांश—

"अनुवादक कवि इस क्षेत्र में निस्सन्देह पहले व्यक्ति हैं। उन्होंने बँगला के सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य का हिन्दी कविता में विद्वत्ता पूर्ण और अविकल अनुवाद करके हिन्दी-संसार मे एक नवीन कार्य किया है। उनकी सर्वतोन्मुखी लेखनी ने बँगला और संस्कृत ज्ञान से विभूषित होकर जो सफलता प्राप्त की है वह हमारी बधाई और अपरिसीम प्रशंसा की पात्र है। उनकी विरहिणी व्रजाङ्गना सङ्गीत और भाषा सौष्ठव की दृष्टि से मूल की भाँति ही मधुर और निर्दोष है। उनका वीराङ्गना और मेघनाद-वध नामक बँगला काव्यों का मिल्टन की जोड का ओज पूर्ण और यथावत् हिन्दी अनुवाद हिन्दी-संसार के लिये एक अभावनीय वस्तु है। उसमें उन्हे आश्चर्यजनक सफलता मिली है।'

पृष्ठ संख्या ५२५ और सुवर्णवर्णांकित सुन्दर
रेशमी जिल्द युक्त मूल्य ३॥

वीराङ्गना

यह भी मधुसूदनदत्त के "वीराङ्गना" नामक बँगला काव्य का हिन्दी-पद्यानुवाद है। इस काव्य मे भी "मेघनाद-वध" महाकाव्य के अनेक गुण हैं। सुन्दर रेशमी जिल्द। मूल्य १)

विरहिणी व्रजाङ्गना

बंगाल के महाकवि मधुसूदनदत्त के "व्रजाङ्गना" नामक काव्य का सुन्दर पद्यानुवाद। विरहिणी राधिका के मनोभावों का इसमें बड़ा ही हृदय-ग्राही वर्णन है। चतुर्थ संस्करण। मूल्य ।)

स्वदेश-सङ्गीत

इसमें गुप्तजी की लिखी हुई भिन्न भिन्न विषयों पर बहुत भाव पूर्ण और ओजोमय राष्ट्रीय कविताएँ है। मूल्य ।।।)

पञ्चवटी

यह काव्य रामायण के एक अंश को लेकर लिखा गया है। कवि ने इसमें जिस सौंदर्य्य की सृष्टि की है, वह बहुत ही मनोमोहक है। मूल्य ।=)

अनघ

श्रीमैथिलीशरण गुप्त लिखित रूपक-काव्य। इसका कथानक बौद्ध जातक से लिया गया है। भगवान् बुद्ध ने अपने पूर्व जन्म में जो ग्राम्य सङ्गठन और नेतृत्व किया था, इसमे उसका विशद वर्णन है। यह ग्रन्थ हिन्दी मे बिलकुल नये ढंग का है, अवश्य पढ़िये। मू० ।।।)

भारत-भारती

इसमे भारत के अतीत गौरव और वर्तमान पतन का बड़ा ही मर्मस्पर्शी वर्णन है। इसका अध्ययन आपको देशभक्ति के पवित्र पथ की ओर अग्रसर करने मे सहायक होगा। हिन्दू-विश्व-विद्यालय मे यह पुस्तक बी० ए० के कोर्स मे है। मूल्य १) और सुन्दर जिल्ददार १॥)

अन्य काव्य-ग्रन्थ

जयद्रथ-वध—वीर और करुण रस का अद्वितीय खण्डकाव्य ॥)

रङ्ग में भङ्ग—मनोहर ऐतिहासिक खण्डकाव्य ।)

चन्द्रहास—भावपूर्ण नवीन पौराणिक नाटक ।॥)

तिलोत्तमा—गद्य-पद्य-मय सरस पौराणिक नाटक ॥)

शकुन्तला—शकुन्तला नाटक के आधार पर निराली रचना ।=

किसान—एक किसान की करुण कथा का हृदयद्रावक वर्णन ।=

पत्रावली—ओजस्वी ऐतिहासिक कविता-पुस्तक ।-)

वैतालिक—भारत की जागृति पर कोमल-कान्त-पदावली ।)

पलासी का युद्ध—बँगला के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय काव्य का पद्यानु

मौर्य्य-विजय—वीर-रस-प्रधान ऐतिहासिक खण्डकाव्य ।)

अनाथ—आधुनिक कथा-मूलक खण्डकाव्य ।)

साधना—भावमूलक विलक्षण गद्यकाव्य १)

संलाप—राय कृष्णदास रचित गद्य काव्य ।=)

मेघदूत—मेघदूत का मनोरम पद्यानुवाद ।)

सुमन—पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी की फुटकर कविताओं का र

अजातशत्रु—श्रीजयशङ्कर 'प्रसाद' रचित प्रसिद्ध नाटक १)

आँसू—'प्रसाद' जी की नई रचना ।)

प्रतिध्वनि—'प्रसाद' जी की छोटी छोटी कहानियों का सङ्ग्रह ।=

परिचय—नवीन कवियों की चुनी हुई कविताओं का सङ्ग्रह १)

स्थायी ग्राहकों को विशेष सुविधा। स्था
ग्राहक बनिये और अपने मित्रों को भी बना

प्रबन्धक—साहित्य-सदन, चिरगाँव (झाँसी)